हिंदी साहित्य और भारतीय किसान

डॉ. बबनराव बोडके

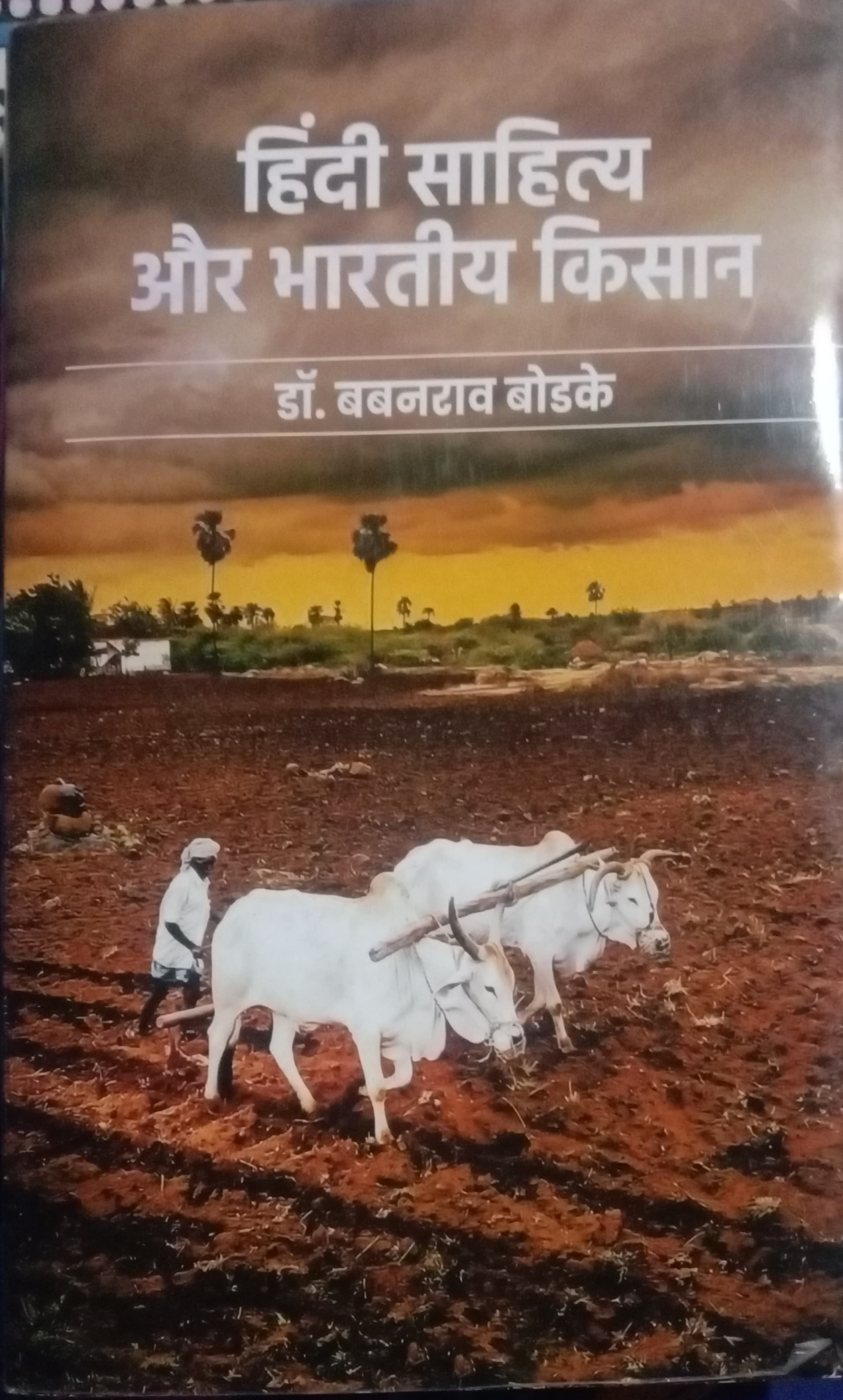

अस्वीकरण

वान्या पब्लिकेशंस, कानपुर द्वारा प्रकाशित लेखों/शोध पत्रों में व्यक्त विचार योगदानकर्ताओं के अपने हैं। वे आवश्यक रूप से संपादक/प्रकाशक के विचारों को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं। संपादक/प्रकाशक इन लेखों/शोध पत्रों की सामग्री/पाठ से उत्पन्न किसी भी दायित्व के लिए किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं हैं।

ISBN 978-93-90052-63-9

मूल्य : आठ सौ पचास रुपये मात्र

पुस्तक	:	**हिंदी साहित्य और भारतीय किसान**
संपादक	:	**प्रो. (डॉ.) बबनराव बोडके**
©	:	संपादक
प्रकाशक	:	**वान्या पब्लिकेशंस**
		1A/2122 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता,
		कानपुर - 208 021
		Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com
		info@vanyapublications.com
		Website : www.vanyapublications.com
		Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	**2024**
मूल्य	:	**850/-**
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर
आवरण	:	गौरव शुक्ल, कानपुर
मुद्रण	:	सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर

16. केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में किसान जीवन का यथार्थ
डॉ. साईनाथ तुकाराम उमाटे 99
17. भारतीय किसानों / मजदूरों के प्रतिबद्ध लेखक : फणीश्वरनाथ रेणु (क्षेत्र गद्य के संदर्भ में)
डॉ. गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे 103
18. किसान जीवन के कुशल चित्तेरे जनकवि 'नागार्जुन'
प्रो. संजय संपतराव जाधव 109
19. हिंदी कविता में किसान का चित्रण
डॉ. न.पु. काळे 120
20. आधुनिक हिंदी कविता और किसान विमर्श
डॉ. दिलीप गुंजरगे 126
21. किसान विमर्श के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिंदी कविता
प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण 130
22. 'गोदान' : कृषक पीड़ा का दस्तावेज़
डॉ. कल्याण पाटील 138
23. प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' में किसान विमर्श
प्रा. डॉ. शेख आर. वाय. 144
24. केदारनाथ अग्रवाल की कविता
शोधार्थी– गुलाबराव शामराव सोनोने 150
25. 'हत्या' कहानी में किसान जीवन संघर्ष की अभिव्यक्ति
डॉ. पुरभाजी माणिकराव भुमरे 155
26. प्रेमचंद के साहित्य में अभिव्यक्त किसान जीवन
प्रो. संगीता श. उप्पे 161
27. 'हत्या' कहानी में 'किसान की आत्महत्या नहीं, हत्या!'
डॉ. सुनील गुलाबसिंग जाधव 168
28. कृषक कवि : केदारनाथ अग्रवाल
डॉ. महावीर सुरेशचंद उदगीरकर 173
29. 'फाँस' उपन्यास में किसानी वेदना
प्रो. बबन रंभाजीराव बोडके 177
30. प्रेमचन्द की कहानी और किसान विमर्श
डॉ. संगीता पांडुरंग लोमटे 181
31. भारतीय किसान की दशा और दिशाएँ
डॉ. बनिता बाबुराव कुलकर्णी 184
32. प्रेमचन्द का गोदान और भारतीय किसान
प्रो. किशोर बळीराम लोहकरे 190

Late Ramesh Warpudkar Arts, Commerce & Science College
Sonpeth Dist. Parbhani (M.S.)

Late Ramesh Warpudkar Arts, Commerce & Science College
Sopneth
Dist.Parbhani
(M.S.)

31

भारतीय किसान की दशा और दिशाएँ

डॉ. बनिता बाबुराव कुलकर्णी

प्रस्तावना

भारत की आत्मा गांवों और किसानों में बसती है। यहां की 70–80 प्रतिशत जनता प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में कृषि पर निर्भर है। किसान हमारे लिए अन्न,फल, सब्जियां आदि ऊपजाता है। वह पशुपालन भी करता है। लेकिन भारतीय किसान की आर्थिक दशा दयनीय है। प्रगति के सुनहरे अतीत पर खड़ा भारतीय कृषि क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था में सदैव ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। भारत के लोग कृषि को एक उत्सव के रूप में मनाते रहे हैं। भारत की पहचान कृषि प्रधान देश के रूप में है। यहां के लोगों के रोजगार का जरिया कृषि है, पर दुर्भाग्य है कि आज आजादी के इतने वर्षों बाद भी यहां किसानों की दशा व दिशा नहीं बदली। भारत में विश्व का 10 वाँ सबसे बड़ा कृषि योग्य भू– संसाधन मौजूद है। हमारी संस्कृति का मूल स्रोत कृषि है। भारत में 900 ईसा पूर्व तक पौधे उगाने फसले उगाने का काम शुरू हो गया था। आज वैज्ञानिक प्रगति ने मानव को अभूतपुर्व साधन दिए हैं। जिसके कारण मानव ने असाधारण सफलता प्राप्त की। समय की मांग के अनुसार कृषि के उत्पादन में परिवर्तन होना लाजमी है। भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है। कृषि हमारे आर्थिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का माध्यम रही है। प्रकृति एवं पर्यावरण की रक्षा के दायित्व का निर्वहन, जिसमें वृक्ष, नदी, पहाड़, पशुधन, जीव जंतु की रक्षा की जिम्मेदारी निभाने जीवन के महत्वपूर्ण आध्यात्मिक कार्य का हिस्सा रहा है।

किसान का अर्थ और परिभाषाएं–

1. **ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार–** "किसान का अर्थ खेती करना, जमीन को फॉर्म के रूप में प्रयोग करना।"[1]
2. **भारत विश्वकोश के अनुसार –** "किसान ऐसे लोगों को कहा गया है, जो अपनी आजीविका और जीवन का गुजर– बसर भूमि जोतकर चलाते हैं, जो स्वंय के उपभोग के लिए उत्पादन करते हैं, तथा जिनका स्वयं पर नियंत्रण होता है, साथ ही जिनकी पारस्परिक ग्रामीण जीवन शैली होती है।"[2]

Arts Commerce & Sc... College Sonpeth Dist. Parbhani (M.S.)

राजपाल हिंदी शब्दकोश में –" किसान का अर्थ खेती, कृषक कार्य से है।"[3]

4. **सुप्रसिद्ध इतिहासकार इरफान हबीब के शब्दकोश में**– "किसान वह है जो स्वंय के परिश्रम, अपने औजारों एवं अपने परिवार की श्रम शक्ति से कृषि कार्य करता है।"[4]

5. **हिंदी शब्द सागर के अनुसार किसान का अर्थ है**– "कृषि या खेती करने वाला।"[5]

इस प्रकार से इन परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि किसान का अर्थ है कृषि कार्य से जुड़ा हुआ व्यक्ति, जो खेती का काम करता हो। खेतों को जोतने, बीज बोने से लेकर फसल उगाने तक का कार्य करता है।

किसान कौन है

किसान हम सिर्फ उसी को नहीं कहते जिसके पास भूमि है, अपितु वे लोग भी किसान है, जिनके पास भूमि नहीं है, लेकिन फिर भी खेती करते हैं। खेतीहर मजदूर,पट्टेदार, बटाई, चरवाहे, भूमिहीन किसान है। इसके साथ मुर्गी पलक, मधुमक्खी पालक, मछुवारे, बागवान, रेशम उत्पादक जैसे विभिन्न खेती संबंधी व्यवसायों आदि में लगे व्यक्ति। त्याग और तपस्या का दूसरा नाम है किसान। वह जीवन भर मिट्टी से सोना उत्पन्न करने की तपस्या करता रहता है। तपती धूप, कड़ाके की ठंड तथा मूसलधार बारिश भी उसकी इस साधना को तोड़ नहीं पाते। हमारे देश की लगभग 70% आबादी आज भी गाँवों में निवास करती है। जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है।

भारतीय किसान की दशा और दिशाएं

भारत कृषि प्रधान देश है, परंतु यहां किसान और कृषि की दशा संतोषजनक नहीं है। कृषि उत्पादन में वृद्धि पूर्व में जनवृद्धि दर से भी कर रही। इसी कारण 1975 तक देश की खाद्य समस्या जटिल बनी रही। निम्न स्तर पर सीमित विकास के बावजूद आज भी भारतीय कृषि परंपरावादी है। भारतीय किसान खेती व्यवसाय के रूप में नहीं करता है, बल्कि जीविकोपार्जन के लिए करता है। कृषि की परंपरागत विधियो, पूंजी की कमी, भूमि सुधार की अपूर्णता, विपणन एवं वित्त संबंधी कठिनाइयों आदि के कारण भारतीय कृषि की उत्पादकता अत्यंत न्यून है। अब नई पीढ़ी में शिक्षा एवं कृषि को कमाई का साधन मानने की प्रवृत्ति से भी कृषि एवं कृषक की आर्थिक दशा में कुछ सुधार आने लगा है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का केंद्र बिंदु है जिसके साथ कई चुनौतियां जुड़ी हुई है। इसलिए जरूरी है कि किसान आधुनिक तकनीकों के साथ–साथ सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं से भी लाभान्वित हो। आज सरकार ग्रामीण विकास, कृषि और भूमिहीन किसानों के कल्याण पर ज्यादा जोर दे रही है। इसलिए यह क्षेत्र बेहतरी के दिशा में परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए परंपरागत तकनीक के स्थान पर आधुनिक तकनीक

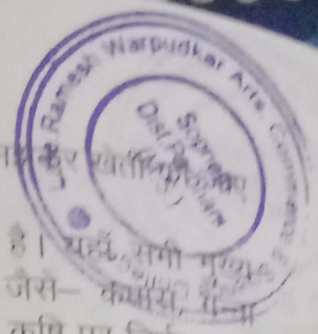

पर जोर दिया जा रहा है। वैज्ञानिक तरीके के साथ सोच समझ कर खेती किया जाए तो फसलों से ज्यादा से ज्यादा उपज दी जा सकती है।

प्राचीन समय से ही भारत में कृषि का महत्व रहा है। यहाँ सभी मुख्य उद्योगों के लिए कृषि से ही कच्चा माल प्राप्त होता है। जैसे– कपास, गन्ना आदि। इसके अलावा कई और भी उद्योग अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर करते हैं। जैसे– चावल मिल, तेल मिल आदि। जिन्हें कच्चा माल चाहिए होता है। कृषि उद्योग से अन्य उद्योग भी जुड़े हुए हैं। उदाहरण के तौर पर परिवहन विभाग" कृषि विभाग का एक अहम हिस्सा है। क्योंकि कृषि उत्पादन को देश में एक जगह से दूसरी जगह ले जाने में या फिर एक देश से दूसरे देश में ले जाने में परिवहन की भूमिका होती है। इस तरह कृषि दूसरे उद्योगों का भी समर्थन करता है। एक अर्थव्यवस्था के रूप में यदि भारत को सफल होना है तो कृषि को उन्नत बनाना होगा तभी भारतीय अर्थव्यवस्था समृद्ध हो पाएगी।

खेतीहर मजदूर आज भी सबसे अधिक गरीब, शोषित और पिछड़ा वर्ग है। अभी भी उनका उपभोग स्तर बहुत कम है। उनकी आय का स्तर बहुत कम है। 1966–1967 की हरित क्रांति के आने से मजदूर परिवारों की मौद्रिक आय में वृद्धि हुई है, परंतु कीमतों में भी तेज वृद्धि हुई। इसलिए वास्तविक मजदूरी को अपनी सामाजिक पारिवारिक जिम्मेदारियां का निर्वाहन करना पड़ता है। और उनके लिए उन्हें साहूकारों व महाजनों से ऋण लेना पड़ता है। महाजन ऊँची ब्याज दर भी लेते हैं वह इनका कई प्रकार से शोषण करते हैं। बाल श्रमिकों को भी सामान्य से कम मजदूरी दी जाती है। और उनसे काम भी अधिक लिया जाता है। श्रम शक्ति में लगे हुए बच्चे अशिक्षित रह जाते हैं। जिससे उनसे प्राप्त होने वाली भविष्य में स्वाभाविक आय भी कम हो जाती है। परिणाम स्वरुप लोग शहरों की तरफ पलायन करने लगे। इस संबंध में धीरेंद्र झा के लेख 'खेत मजदूर का बढ़ता हस्तक्षेप' में भी मिलता है– "विश्व व्यापार नियंत्रित भारतीय कृषि नीति ने जिस कृषि संकट को पैदा किया है उसकी सबसे ज्यादा मार गाँव के खेत मजदूर पर पड़ी है, कृषि क्षेत्र में रोजगार के अवसरों पर बेतहाशा कमी आई है, रोजगार के लिए मजदूरों का पलायन बड़े पैमाने पर हो रहा है।"[6] इस प्रकार से आज के बदलते जमाने में खेतीहर मजदूर की संख्या में दिन प्रतिदिन वृद्धि हो रही है।

भारतीय कृषि परंपरागत कृषि थी। आजादी से पहले यहाँ परंपरागत तरीके से खेती की जाती थी, किंतु अंग्रेजों के भारत में प्रवेश के पश्चात इन्होंने यहां की कृषि के तौर तरीके में भारी बदलाव किए। कृषि के शुरुआती दौर में किसान स्वयं अपने खेतों के बीज को ही अगले वर्ष के लिए बचाकर रखते थे, और उसी से वह फसल की बुवाई करते थे। इससे उन पर बीज खरीदने का अतिरिक्त बोझ नहीं पड़ता था और पैदावार भी अच्छी होती थी। वहाँ के किसानों के पास धान की कई किस्मे होती थी। किंतु आज इस तरह के बीच समाप्त हो गए हैं। सरकार द्वारा खोली गई कई संस्थाओं से और बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा अलग–अलग

Warpudkar Arts Commerce Sonpeth Dist. Parbhani (M.S.)

किस्म के बीज किसानों को बेचे जाते हैं। किसानों को बीज तो प्राप्त हो जाते हैं, किंतु उनसे उनके लिए किसानों को अतिरिक्त मूल्य चुकाना पड़ता है। इन्हें हर साल नए बीज खरीदने पड़ते हैं। इनके पास पर्याप्त मात्रा में धन भी नहीं होता है जिससे यह कर्ज के बोझ में दबते चले जा रहे हैं। साथ ही बीच के साथ खाद की समस्या होती है। पहले किसान खुद अपने घर पर बनाई हुई देशी खाद का इस्तेमाल करते थे वे गोबर, नीम, खरपतवार, राख आदि के प्रयोग से बनाते थे। जिससे उन्हें अलग से धन नहीं व्यय करना पड़ता था। किंतु आज सरकार द्वारा अलग–अलग तरीके से रासायनिक खाद बनाई जा रहे हैं – जैसे युरिया, पोटेशियम, फॉस्फोरस, जिंक आदि। सरकार द्वारा किसानों को दिए जाने वाले बीजों में कई तरह के रसायनों का प्रयोग करना पड़ता है तभी उनकी पैदावार होती है, किंतु रसायन खेत की उर्वरक शक्ति को कम कर देते हैं। रसायन पर्यावरण के लिए भी हानिकारक होते हैं। जी.एस. भल्ला ने 'भारतीय कृषि आजादी के बाद' पुस्तक में कहां है– "मिट्टी की गुणवत्ता के अतिरिक्त उर्वरकों के असंतुलित प्रयोग के कारण भारतीय मृदा में पोषक तत्वों की कमी हो गई है। मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी बढ़ती जा रही है, ये पौधे के विकास को बुरी तरह प्रभावित करती है, तथा मिट्टी में कार्बनिक, जैविक पदार्थ में कमी लाकर फसलों द्वारा नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा पोटेशियम के समुचित अवशोषण में हस्तक्षेप करती है।"[7] स इस तरह के बीज और खाद के प्रयोग से किसानों पर खेती का खर्चा बढ़ रहा है। किसान कर्ज के जाल में फसता गया। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक वह अपनी जमीन गिरवी रखने या बेचने पर मजबूर न हो जाए। "साइमन रिपोर्ट में कहा गया था "अधिकांश किसान महाजन के कर्जदार है।"[8] हमारे यहां के अधिकांश किसान गरीबों का जीवन जीते हैं। उनके पास जमीन थोड़ी होती है। जिससे उनका गुजारा होना मुश्किल होता है उनके पास खुद के शादी– ब्याहय तीज– त्यौहार में लगान देने और धार्मिक कार्यों आदि में खर्च करने के लिए भी पैसे नहीं होते हैं। जिसके कारण उन्हें कर्ज लेकर ही काम चलाना पड़ता है। उनकी आर्थिक स्थिति ही खराब है और ऊपर से मालगुजारी, वसुली और लगान में भी उनकी बची–खुची संपत्ति भी चली जाती है। रजनी पाम का कथन है– "कर्ज का मुख्य कारण किसानों की आम गरीबी है।"[9]

किसान एवं खेतीहर मजदूर दोनों कृषि समाज का अभिन्न अंग है। दोनों के सहयोग से ही कृषि व्यवस्था सुचारु रूप से चल पाती है। खेतीहर मजदूर जिसका कोई ठिकाना नहीं होता। वह जहां कहीं भी जाता है वहीं के कृषक समाज के जीवन को अपना बना लेता है। इस प्रकार से हम देखते हैं कि खेती शुरुआती तौर से अभी तक हमारे देश के किसानों की स्थिति में खास परिवर्तन नहीं हुआ। भारत में कृषि हजारों वर्षों से की जा रही है परंतु प्रौद्योगिकी और संस्थागत परिवर्तन के अभाव में लगातार भूमि संसाधन के प्रयोग से कृषि का विकास अवरुद्ध हो जाता है। 60 प्रतिशत से भी अधिक लोगों को आजीविका

Ramesh Warpudkar Arts, Commerce & Science ... Sonpeth Dist Parbhani (M.S.)

प्रदान करने वाली कृषि में कुछ गंभीर तकनीकी प्रगति करने की। कृषि में कुछ गंभीर तकनीकी एवं संस्थागत सुधार लाने की आवश्यकता है। कृषि के महत्व को समझते हुए भारत सरकार ने इसके आधुनिक करण के लिए भरसक प्रयास किए है। भारतीय कृषि में सुधार के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद व कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना, पशु चिकित्सा सेवाएं, बागवानी विकास, मौसम विज्ञान के पूर्वानुमान के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास को वरीयता दी गई। सरकार ने वर्ष 2022 तक किसानों तथा कृषि क्षेत्र में से जुड़े लोगों की आमदनी दोगुनी करने के लिए अनेक योजनाएं बनाई है। इनके माध्यम से किसानों की दशा में सुधार लाकर उन्हें नई दिशा दी जा सकती है।

सारांश

आज भारतीय कृषि दो राहे पर है। भारतीय कृषि को सक्षम और लाभदायक बनाना है तो सीमांत और छोटे किसानों की स्थिति सुधारने पर जोर देना होगा। एक किसान जिसके पास उसकी जमीन होती है, वह उसी के सहारे अपना जीवन यापन करता है। अर्थात उसके पास जीने के लिए जमीन का सहारा होता है। किंतु खेतीहर मजदूर का जीवन निराधार होता है उसके पास ऐसा कुछ नहीं होता। जिसके सहारे पर वह जीवन यापन कर सके। उसका श्रम ही उसकी कुल पूंजी होती है। खेती हर मजदूर के पास श्रम के अतिरिक्त कुछ नहीं होता है, उसे यदि गांव में काम नहीं मिलता है, तो वह उस स्थान को छोड़कर मजदूरी की तलाश में अन्य स्थान पर चला जाता है। किसान अपनी खेती से जुड़ी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संघर्ष करता है। खेती किसानी में घाटा होने पर भी किसान का कृषि से जुड़े रहना एक मजबूरी होता है। उसका भूमि प्रेम और एक तरह से अपनी पुस्तैनी संपत्ति को छोड़कर अन्य कार्य अपनाना उसके लिए मुश्किल भरा काम होता है। इसी कारण वह कृषि से जुड़ा रहता है। प्राकृतिक प्रकोप किसान की स्थिति को और भी बदतर बना देती है। आज का किसान अपने आस–पास शोषण तंत्र को पहचान गया है। और उसके खिलाफ आवाज भी उठा रहा है। कुल मिलाकर अपने–अपने भले बुरे की पहचान करना किसान ने सीख लिया है। कृषि में बदलाव ने किसान की दिशा और दशा दोनों में नये युग की शुरुआत कर दी है। किसानों की आमदनी को दोगुना करने का ध्यान रखते हुए भारतीय किसान और भारतीय कृषि की दशा को सुधारने और इसे नई दिशा देने के लिए सरकार दृढ संकल्प है। आज देश में प्राकृतिक खेती एक विकल्प बनकर उभर रही है। केंद्र और राज्य सरकारों से लेकर कृषि वैज्ञानिकों व किसानों द्वारा इस दिशा में अपने कदम बढ़ा दिए गए हैं। माना जा रहा है कि आने वाले कुछ वर्षों में प्राकृतिक खेती के सुखद परिणाम देश के सामने होंगे। स्वस्थ व्यक्ति स्वस्थ खेती, स्वस्थ माटीऔर स्वस्थ भारत आज प्राकृतिक खेती से ही संभव हो सकता है। स्वस्थ भारत, आत्मनिर्भर भारत और श्रेष्ठ भारत के लिए प्राकृतिक खेती

Late Ramesh Warpudkar Arts, Commerce & Science College Sonpeth Dist Parbhani (M.S.)

जरूरी हो गई है। कृषि वैज्ञानिकों व किसानों द्वारा इस दिशा में अपने कदम बढ़ा दिए गए हैं। माना जा रहा है कि आने वाले कुछ वर्षों में प्राकृतिक खेती के सुखद परिणाम देश के सामने होंगे।

भारतीय कृषि सतत एक नए युग की तरफ अग्रसर है। आज हमारा देश वैज्ञानिकों के द्वारा किए गए नित नवीन अनुसंधान उन्नत तकनीक कृषकों की मेहनत तथा सरकार के सफल प्रयासों से फसलों की पैदावार में आत्मनिर्भर हो सका है। डिजिटल कृषि, कृषि उत्पादन के लिए आवश्यक सभी घटकों हेतु एक नई दिशा का निर्धारण कर रहा है। परिवर्तन की इस हवा को किसानों के अथक परिश्रम एवं लगन ने नया आयाम दिया है। जिसके परिणाम स्वरुप भारत अपने खाद्यान्न की आवश्यकता को पूरा करने के साथ–साथ विश्व को भी भोजन उपलब्ध कराने में समर्थ बन पाया है।

संदर्भ

1. अंग्रेजी हिंदी शब्दकोश ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस न्यू दिल्ली– वर्मा एस.के. एवं अन्य– इडिशन– 2003– पृष्ठ 64
2. भारत विश्वकोष –अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस– 48 31/ 24 प्रहलाद गली –अंसारी रोड ,दरियागंज नई दिल्ली– 110002 –संस्करण 2014– पृष्ठ 688
3. राजपाल हिंदी शब्दकोश– हरदेव बाहरी 1590 मदरसा रोड, कश्मीरी गेट दिल्ली 110006 – पृष्ठ 67
4. भारतीय इतिहास के मार्क्सवादी परिकल्पना– (अनु.) इरफान हबीब –(अनु.)– तरुण कुमार– ग्रंथ शिल्पी प्राइवेट लिमिटेड–बी.7 सुभाष चौक, लक्ष्मी नगर दि 110002 – संस्करण 2017– पृष्ठ 112
5. संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर– नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसीय रामचंद्र वर्मा– संस्करण वि. संवत 2060 – पृष्ठ 202
6. हंस – सं. राजेंद्र यादव– अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. 2ध्36 अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली.– अगस्त 2006 – पृष्ठ 124
7. भारतीय कृषि आजादी के बाद– भल्ला जी.एस. –(अनु) रजनीश कुमार– राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत. नेहरू भवन इंस्टीट्यूशन एरिया– फेज 2– नई दिल्ली– संस्करण 2016– पृष्ठ 90
8. आज का भारत– रजनी पाम दल– (अनु) रामविलास शर्मा– ग्रंथ शिल्पी प्रा. लि. बी 7– सुभाष चौक, लक्ष्मी नगर दिल्ली– संस्करण 2000– पृष्ठ 337
9. वही– पृष्ठ 239

हिंदी विभागाध्यक्षा
कै.रमेश वरपुड़कर महाविद्यालय, सोनपेठ.
ता.सोनपेठ जि. परभणी
पिन कोड –431516
मेल–kulkarnivanita02@gmail.com

Principal
Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth. Dist. Parbhani